जगदीश नन्दन महाविद्यालय, मधुबनी

▪ दर्शनशास्त्र (प्रतिष्ठा एवं आनुसांगिक)

चार्वाक का सुखवाद

नीति–विचार या आचार–मीमांसा

- चार्वाक का नीति विचार उसके ज्ञानमीमांसीय एवं तत्वमीमांसीय विचारों से प्रभावित एवं संचालित है। चार्वाक नैतिकता के क्षेत्र में इहलौकिक, स्वार्थवाद एवं सुखवाद को प्रश्रय देते हैं। इनके अनुसार नैतिक दृष्टि से वही कर्म उचित है जिससे इस जीवन में मानव शारीरिक सुखों की प्राप्ति कर सके। वे भारतीय दर्शन में स्वीकृत चार पुरूषार्थों में से केवल अर्थ और काम को स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार इनमें काम परम पुरूषार्थ है एवं अर्थ उसकी प्राप्ति का साधन है। चार्वाक के नीति विचार का प्रतिपादन नीचे दिये गये श्लोक से स्पष्ट होता है–

''यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिवेत्
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुत्तः''

अर्थात् 'जब तक जीयो सुख से जीयो, ऋण लेकर भी घी पियो'। शरीर के विनाश के पश्चात् यहाँ पुनः आगमन नहीं है।

- आत्मा, स्वर्ग, कर्मनियम, पुनर्जन्म आदि की सत्ता को न मानने के कारण वे इस जीवन के अपने इन्द्रिय सुखों की प्राप्ति को ही जीवन का लक्ष्य निर्धारित करते हैं (इहलौकिक, निकृष्ट(स्थूल), स्वार्थवादी–सुखवादी)। चार्वाक मतानुसार परलोक के सुख की लालसा से इस जीवन के सुखों को त्याग करना मूर्खता का परिचायक है, क्योंकि कल मयूर मिलेगा इस आशा पर कोई भी व्यक्ति हाथ में आये कबूतर का परित्याग नहीं कर सकता।
- सुखवाद के संदर्भ में चार्वाकों में दो संप्रदाय दिखाई देते हैं– (1) धूर्त चार्वाक और (2) सुशिक्षित चार्वाक। धूर्त चार्वाक व्यक्तिगत इन्द्रिय सुखों की ही प्राप्ति का प्रयास करते हैं, जबकि सुशिक्षित चार्वाक इन्द्रिय सुखों के साथ–साथ मूल्यों की भी बात स्वीकार करते हैं।
- निकृष्ट चार्वाक की नीति–विचार की तुलना पाश्चात्य के एरिस्टिप्पस के स्वार्थमूलक सुखवाद से की जा सकती है।
- बाद के कुछ सुशिक्षित चार्वाकों ने अर्थ और काम के अतिरिक्त नैतिक मूल्य के रूप में धर्म को भी स्वीकार किया है। इस रूप में यहाँ कालान्तर में *त्रिवर्ग* को स्वीकार किया गया है।
- **आलोचना :**
  - ✓ चार्वाक के नीति विचारों में जीवन के उच्च आदर्शों एवं मूल्यों को महत्व एवं स्थान नहीं दिया गया है। यदि प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने ही सुख–प्राप्ति की प्रयास करे तो फिर सामाजिक व्यवस्था खतरे में पड़ सकती है।
  - ✓ चार्वाक मत भौतिकतावाद को बढ़ावा देता है। इससे उपभोगतावादी प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है। पर्यावरणीय दृष्टिकोण से इसे अनुकूल नहीं माना जा सकता।

HEMCHANDRA KUMAR

✓ निकृष्ट चार्वाक सुखों में गुणात्मक भेद नहीं मानते। वे शारीरिक सुखों को ही वरीयता देते है।

- **चार्वाक नीति दर्शन की प्रासंगिकता :**
  - ✓ कल्पना लोक से आम जनता का ध्यान हटाकर इस जगत में सक्रिय होने की बात की गयी है।
  - ✓ लोक संदर्भों में प्रचलित ''जब तक सांस, तब तक आस'', ''जान है तो जहान है'' इत्यादि वाक्य भी एक संदर्भ में चार्वाक मत का समर्थन करते हैं।
  - ✓ चार्वाक दर्शन भाग्यवादी और पलायनवादी होने से बचाता है।

HEMCHANDRA KUMAR